दादी जानकी ने दिया महानता के लिए देहाभिमान से ऊपर उठने का संदेश

ज्ञानसरोवर। परमात्मा शक्ति अनुभूति वर्ष के संदर्भ में ब्रह्माकुमारीज धार्मिक सेवा प्रभाग द्वारा ज्ञानसरोवर परिसर में **'मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना में परमात्म शक्ति का योगदान'** विषय पर आयोजित चार दिवसीय सम्मेलन को सम्बोधन करते हुए संस्था की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी ने अतीत में सोने की चिड़िया कहलाने वाले भारत देश में नारी के नित्य प्रति घटते सम्मान पर गहरी चिन्ता जताई। खचाखच भरे हार्मनी हाल में स्वागत एवं उद्घाटन सत्र के दौरान सारगर्भित सम्बोधन में दादीजी ने कहा कि इस धरा पर नारी सदैव श्रद्धा एवं पूजा का पर्यायवाची मानी जाती थी लेकिन ज्यों-ज्यों धर्म और मूल्यों की ग्लानि हुई यह भाव घटता गया। आज नारी शरीर को विज्ञापनबाजी के लिए जिस निर्दयता से प्रदर्शित किया जा रहा है वह शर्मनाक है।

दादीजी ने कहा कि देश की आजादी से पूर्व सिंध प्रांत में भी पांच साधुओं को भोजन करवाने के बाद परिवारजन भोजन ग्रहण किया करते थे लेकिन समय की रफ्तार ने सभी मान-मर्यादाओं परम्पराओं को कूड़ेदान में फेंक दिया। धर्म की ग्लानि के साथ पापाचार,भ्रष्टाचार और भौतिक साधनों के प्रति लालसा बढ़ी। वर्तमान में पैसा प्रधान हो गया, पोजीशन बनाने व दिखाने के लिए लोग गलत साधनों से पैसा बटोरने में लगे हुए हैं। इसी कारण भ्रष्टाचार भी दिन ब दिन बढ़ता जा रहा है। आशीर्वचन के दौरान दादी जी ने सिख समुदाय की पावन पुस्तिका सुखमनी साहिब के कुछ अंशों को भी उद्धत किया। उन्होने कहा कि सभी धर्म ठगी, काम, क्रोध, लोभ, अहंकार से मुक्ति पाने की प्रेरणा देते हैं। ब्रह्माकुमारी संस्था के निमित्त संस्थापक पिताश्री ब्रह्मा ने भी इन्ही बुराइयों से मुक्त वायुमण्डल विकसित करने की नसीहत दी। उन्होने ईश्वरीय सम्प्रदाय का गठन किया जबकि इससे पहले दैवीय और आसुरी सम्प्रदाय के बारे में ही लोग जानते थे।

'सिमर-सिमर-सिमर सुख पाओ' का संदेश देते हुए दादी ने कहा कि कामी और क्रोधी व्यक्ति की प्रवृत्ति को उसकी आंखें ही उजागर कर देती हैं। मनुष्य अपने कर्मों से ही धर्मात्मा या महानात्मा कहलाता है, दानी कहा जाता है लेकिन एक बात स्पष्ट है कि तन के दायरे में सिमट कर कोई भी व्यक्ति महान नहीं बन सकता। महानता के लिए देहाभिमान से ऊपर उठना पड़ेगा। परमात्मा शक्ति एवं ज्ञान का सागर है वह पतितों को पावन बनाता है यह विश्वास लेकर यदि हम स्व-दर्शन करेंगे और इस मर्म को समझ पायेंगे कि हम अपने कर्मों से ही दु:खी बनते हैं तो परमात्मा से लगाव आसान हो जायेगा। इस लगाव के लिए शुद्ध आहार और

सात्विक विचार परम आवश्यक हैं। निर्विकारी बनने की प्रेरणा देते हुए दादीजी ने विश्वास जताया कि धार्मिक प्रभाग के इस कार्यक्रम में देश के विभिन्न कोनों से आए भाई-बहन फरिश्ते बनकर जायेंगे।

प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु.मनोरमा बहन ने स्वागत सम्बोधन में कहा कि प्रत्येक व्यक्ति एक अदृश्य भय अपनी मुट्ठी में समेटे हुए है। हमारे सामने यक्ष प्रश्न यह है कि मानवता चौराहे पर रो रही है, नारी को देवी मानने वाले इस देश में अखबारों को पन्ने नारी के शोषण के समाचारों से लबरेज नजर आते हैं। रक्षक ही भक्षक बन गये। हमें ऐसा रास्ता तलाशना होगा जिस पर मिलकर चलते हुए इन विकट परिस्थितियों से देश को उबारने में सफल हों। धर्म से ही हम सबकी रक्षा हो सकती है।

अध्यक्षीय उद्‌बोधन में ब्रह्माकुमारी संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी ने कहा कि महात्मागांधी सरीखे महापुरूषों ने हमें आजादी दिलाते हुए रामराज्य की स्थापना की जो कल्पना की उसे साकार करना अभी बाकी है। भले ही भारतवासी भगवान की जितनी वंदना करते हैं उतनी किसी अन्य देश में नहीं की जाती। फिर भी मनुष्य के पांच विकारों के वशीभूत होने के कारण इस देश की स्थिति निरंतर चिन्ता का विषय बनती जा रही है।

मुम्बई की नन्हीं भारतनाट्यम कलाकार श्रद्धा के स्वागत नृत्य एवं मधुर वाणी ग्रुप के स्वागत गान से प्रारंभ हुए उद्‌घाटन सत्र में शुभकामनाएं अर्पित करते हुए राजस्थान प्रदेश भाजपा के पूर्व अध्यक्ष एवं सांसद डॉ.महेशचन्द्र शर्मा ने कहा कि मूल्यों पर प्रहार विदेशी शक्तियों के साथ-साथ हमारे अपने विकार ही कर रहे हैं। समय आ गया है कि आध्यात्मिक नेतृत्व ऐसा कवच प्रदान करे जिससे समाज में मूल्यों की पुनर्स्थापना सम्भव हो। ब्रह्माकुमारी संस्था के कार्यक्रम देखकर विश्वास बंधता है कि मानवता को अब पराजित नहीं होने दिया जायेगा।

प्रज्ञान मिशन पुरी के सचिव स्वामी सम्पूर्णानंद ने कहा कि मातृभाषा और नारी के सम्मान में गिरावट के साथ-साथ भारत में अनुशासन, स्नेह, सदाचार व परोपकार का भी हनन हुआ है। राम, बुद्ध और गांधी के देश की दुर्दशा के प्रति चिंतित धर्मानुजों को एक साथ चलना होगा। स्वार्थों को तिलांजलि देकर किए गये सामुहिक प्रयासों से ही देश की दशा बदलेगी।

श्री सच्चा अध्यात्म आश्रम इलाहाबाद के स्वामी डॉ.चन्द्रदेव ने कहा कि संसद और विधानसभाओं में तो मात्र राजनीतिक उठापटक की चर्चा होती है लेकिन ज्ञानसरोवर में केवल स्नेह, सद्‌भाव और सदाचार की चर्चा सुनकर यह विश्वास पुन: जागृत हो रहा है कि विषय

विकारों से ओतप्रोत व्यक्ति जब पावनता का संदेश ग्रहण करेंगे तो वह दिन दूर नहीं जब बच्चा-बच्चा राम कहलायेगा।

श्री स्वामीनारायण गुरूकुल वलसाड के स्वामी एल.एम.शास्त्री ने कहा कि विकास के बावजूद मूल्यों में निरंतर आ रही गिरावट धर्माचार्यों की सहनशक्ति से बाहर होते जा रही है। सिंध में स्थापित ब्रह्माकुमारी संस्था के प्रणेता ब्रह्मा बाबा की संकल्प-शक्ति के परिणामस्वरूप आज सभी सम्प्रदायों के प्रतिनिधि एक मंच पर जमा होकर सहयोग करने को तैयार हुए हैं यह देश के लिए आशा की किरण पैदा करता है।

श्री गुरूसिंह सभा लुधियाना के सचिव राजेन्द्र सिंह बत्रा ने कवितामयी शुभकामनाएं देते हुए कहा कि निष्काम भाव से ब्रह्माकुमारीज द्वारा संचालित विश्व शान्ति का संकल्प अवश्य पूरा होगा। मंच संचालन ब्र.कु.कुन्ती बहन ने किया।